Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजलिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

नवंबर,दसिंबर/2024 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Nov,Dec/2024

Date of Publication:10-12-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

44वें वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2024 की झलकियाँ

25.10.2024 को इफ़्तिताही इजलास से पहले अंसारुल्लाह का परचम लहराने के बाद दुआ करवाते हुए जनाब अताउल मुजीब लोन साहिब सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत ।

27.10.2024 को आयोजित समापन इजलास से ख़िताब फ़रमाते हुए जनाब मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला एवं अमीर जमाअत क़ादियान।

27.10.2024 को आयोजित समापन इजलास के अवसर इनाम तक़सीम करते हुए जनाब सय्यद तनवीर अहमद साहिब सदर मजलिस वक़्फ़े जदीद ।

27.10.2024 को आयोजित समापन इजलास के अवसर इनाम तक़सीम करते हुए जनाब मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब, सदर सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान ।

44वें वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2024 की झलकियाँ

26.10.2024 को आयोजित मुक़ाबला नज़्म की अध्यक्षता करते हुए जनाब तनवीर अहमद साहिब नाइब सदर अंसारुल्लाह जुनूबी मग़रिबी हिन्द ।

25.10.2024 को आयोजित मुक़ाबला हुस्ने क़िरत की अध्यक्षता करते हुए जनाब एम ताजुद्दीन साहिब नाइब सदर अंसारुल्लाह जुनूबी हिन्द ।

27.10.2024 को आयोजित अंतिम इजलास में हाज़िर अंसार सदस्य का एक दृश्य ।

26.10.2024 को आयोजित मुक़ाबला तक़रीर की अध्यक्षता करते हुए जनाब लुक़मान अहमद भट्टी साहिब नाइब सदर अंसारुल्लाह शिमाली हिन्द ।

26.10.2024 को आयोजित दिलचस्प मुक़ाबला रस्साकशी का एक दृश्य ।

27.10.2024 को आयोजित Ask a Doctor कार्यक्रम में अंसार के प्रश्नों का उत्तर देते हुए जनाब डॉक्टर महमूद अहमद बट साहिब ।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم وعلی عبدہ المسیح الموعود

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज

उप-सम्पादक(हिन्दी)
डॉ.अब्दुल माजिद
9915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य :250 ₹
विदेश: 50अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume–22 नवंबर/दिसंबर 2024 Issue -11

विषय सुचि	**पृष्ठ**
दर्सुल कुरान	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय- कर्म में सफलता मृत्यु में जीवन है	4
निवेदन सदर मज्लिस- खिलाफ़त के माध्यम से बरकत की प्राप्ति	5
कुरआन की सच्चाइयाँ और आधुनिक आविष्कारों से उनकी पुष्टि- भाग २ डॉक्टर हाफिज़ सालेह मुहम्मद अलाहदीन साहिब(मरहूम)	7

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed @ Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published @ Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

कुरआन करीम

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (سورة النحل: 98)

अनुवाद: पुरुष और स्त्री में से जो भी पुन्य कर्म करेगा बशर्ते कि वह मोमिन हो तो उसे हम निश्चित रूप से एक पवित्र जीवन के रूप में जीवित कर देंगे। और उन्हें अवश्य उनका प्रतिफल उनके उत्कृष्ट कर्मों के अनुसार देंगे जो वे करते रहे।

हदीस नबवी ﷺ

عَنْ اَبِيْ اَيُّوْبَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :
اَخْبِرْنِيْ بِعَمَلٍ يُّدْخِلُنِي الْجَنَّةَ ، قَالَ : تَعْبُدُ اللّٰهَ لَا تُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا،وَتُقِيْمُ
الصَّلٰوةَ، وَتُؤْتِي الزَّكٰوةَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ۔ مسلم كتاب الايمان باب بيان الايمان الذى يدخله به الجنة

अबू अय्यूब (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा कि मुझे कोई ऐसा काम बताइए जिससे मैं जन्नत जा सकूं। आपने (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाया कि तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, बाजमात नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और अपने रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

"याद रखो कि सिर्फ बातें और शब्द काम नहीं आ सकते जब तक कि अमल न हो।

"याद रखो कि केवल बातों और शब्दों का कोई मूल्य नहीं है जब तक कि अमल (कर्म) के साथ न हो। इसीलिए अल्लाह ने फरमाया है:– अल्लाह के नज़दीक यह बहुत नापसंद है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। अब मैं अपने पहले उद्देश्य पर आता हूं, जो यह है: जैसे दुश्मन के मुकाबले में सीमा पर घोड़े तैयार रखना ज़रूरी है ताकि दुश्मन सीमा लांघ न सके, उसी तरह तुम भी तैयार रहो। मैं पहले भी कह चुका हूं कि यदि तुम इस्लाम का समर्थन और सेवा करना चाहते हो, तो पहले खुद तक़वा और पवित्रता अपनाओ। इससे तुम खुद अल्लाह तआला की पनाह में आ जाओगे और फिर इस सेवा का सम्मान और प्रतिफल प्राप्त करोगे।

तुम देख रहे हो कि मुसलमानों की बाहरी ताकत कितनी कमजोर हो गई है। दूसरी कौमें उन्हें हीनता और नफरत की नज़र से देखती हैं। अगर तुम्हारी आंतरिक और दिली ताकत भी कमजोर और गिर गई, तो समझ लो कि सब खत्म हो गया।

अपने आचरण और व्यवहार को ऐसा मत बनाओ जिससे इस्लाम को कलंक लगे। बुरे आचरण वाले और इस्लाम की शिक्षाओं का पालन न करने वाले मुसलमानों (का)... गैर-इस्लामी काम केवल उसकी ही तौहीन का कारण ही नहीं बनता बल्कि इस्लाम की छवि को भी खराब करता है।

तुम्हारी असली ताकत तक़वा और पवित्रता है। मुसलमान से पूछने पर 'अलहम्दुलिल्लाह' कह देना सच्चा शुक्र और आभार नहीं है। अगर तुमने वास्तविक आभार यानी पवित्रता और तक़वा के रास्ते अपनाए, तो मैं तुम्हें बशारत देता हूं कि तुम सीमा पर खड़े हो और कोई तुम पर हावी नहीं हो सकता।

असल बात यह है कि तक़वा का रौब दूसरों पर भी पड़ता है और अल्लाह तआला परहेज़गारों को कभी बर्बाद नहीं करता।" *(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 48-49, संस्करण 2003)*

सम्पादकीय

कर्म में सफलता मृत्यु में जीवन है

अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में ईमान के साथ अच्छे कर्मों (आमाल-ए-सालिहा) को जोड़कर यह स्पष्ट कर दिया है कि बिना अच्छे कर्मों के ईमान बेकार है। ईमान उसी समय विशेष महत्व रखेगा जब उसके साथ अच्छे कर्म होंगे। अल्लाह तआला केवल सच्चे ईमान वालों की रक्षा करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

"जो लोग केवल आम (सामान्य) ईमान रखते हैं, वे परेशानियों में हिस्सा लेते हैं, और अल्लाह तआला उनकी परवाह नहीं करता। लेकिन जो लोग खास (विशेष) ईमान रखते हैं, अल्लाह तआला उनकी ओर ध्यान देता है और उनकी रक्षा करता है।

مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ (जो अल्लाह का हो, अल्लाह उसका हो जाता है)।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 179, संस्करण 2016)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने **29** नवंबर 2013 से 7 फरवरी 2014 तक के 9 जुमे के खुत्बों में अमाल की इस्लाह (सुधार) की आवश्यकता और महत्व पर चर्चा की। सय्यदना हुज़ूर अनवर ने आत्ममूल्यांकन के संदर्भ में फरमाया:

**"लेकिन जब हम इस बात पर ध्यान देते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे अंदर जो अमली (व्यावहारिक) बदलाव लाने की कोशिश की, उसकी स्थिति क्या है, तो चिंता होती है। सवाल उठता है:

- क्या हम समाज की हर बुराई का मुकाबला कर रहे हैं और उसे हरा रहे हैं?
- क्या हमारे हर अमल (कर्म) को देखकर हमारा समाज प्रभावित हो रहा है, या हम खुद समाज के प्रभाव में आकर अपनी तालीम और रिवाजों को भूलते जा रहे हैं?
- क्या हमने झूठ और धोखाधड़ी से दूर रहते हुए सच्चाई के उच्चतम मानदंड स्थापित कर लिए हैं?
- क्या हमने दुनिया के मामलों के साथ-साथ आखिरत (परलोक) पर भी ध्यान रखा है?

- क्या हम वास्तव में दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिकता दे रहे हैं?
- क्या हम हर बुराई से बचने की कोशिश कर रहे हैं?
- क्या हम पांच वक्त की नमाज का ध्यान रख रहे हैं?
- क्या हम हमेशा दुआ में लगे रहते हैं और अल्लाह को विनम्रता से याद करते हैं?
- क्या हम बुरी संगत और ऐसे साथियों से बच रहे हैं जो हम पर बुरा प्रभाव डाल सकते हैं?
- क्या हम अपने माता-पिता की सेवा और उनकी बातों का सम्मान कर रहे हैं?
- क्या हम अपनी पत्नी और उसके परिवार के साथ नरमी और भलाई से पेश आ रहे हैं?
- क्या हम अपने पड़ोसी को किसी छोटी से छोटी भलाई से वंचित तो नहीं कर रहे?
- क्या हम अपने दोषी को माफ कर रहे हैं?
- क्या हमारे दिल हर तरह के बैर और द्वेष से मुक्त हैं?
- क्या हर पति और पत्नी एक-दूसरे की अमानत का हक अदा कर रहे हैं?
- क्या हम अपनी बैअत के वादों के अनुसार अपने हालात पर नज़र रख रहे हैं?
- क्या हमारी महफ़िलें दूसरों पर इल्जाम लगाने और चुगली करने से पाक हैं?
- क्या हमारी ज्यादातर महफ़िलें अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़िक्र से भरी रहती हैं?

अगर इन सवालों का जवाब 'न' में है, तो इसका मतलब है कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम से दूर हैं, और हमें अपनी अमली हालतों पर चिंता करनी चाहिए। लेकिन वे लोग खुशकिस्मत हैं, जिनका जवाब 'हां' में है, और वे अपनी अमली हालत पर ध्यान देकर बैअत का हक अदा कर रहे हैं।" *(खुत्बा जुमा, 6 दिसंबर 2013)*

है अमल में कामयाबी मौत में है ज़िन्दगी

जा लिपट जा लहर से दरिया की कुछ परवाह न कर

"कामयाबी अमल में है और मौत में ज़िंदगी छिपी है। लहरों से डरकर पीछे मत हटो, बल्कि दरिया का सामना करो।"

हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें अपने ईमान को अच्छे कर्मों से सजाने की तौफ़ीक अता फरमाए। आमीन। *(हाफिज़ सैयद रसूल नियाज़)*

निवेदन सदर मज्लिस

खिलाफ़त के माध्यम से बरकत की प्राप्ति

औलाद के लिए नेक नमूना बनने की ओर हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ बार-बार अंसारुल्लाह को ध्यान दिलाते रहे हैं। आज के भौतिक युग में औलाद की सही परवरिश करना सबसे कठिन समस्याओं में से एक बन चुका है, क्योंकि हर तरफ गुमराही और बुराई का बोलबाला है। अल्लाह तआला औलाद को जहन्नम की आग से बचाने की ताकीद करते हुए फरमाता है:

"हे ईमान लाने वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं।" (अल-तहरीम: 7)

इस आयत में बताई गई एक आग वह है जो आख़िरत (परलोक) में अल्लाह के हुक्मों के खिलाफ जीवन बिताने वालों को सज़ा के तौर पर मिलेगी। लेकिन इसका मतलब एक और आग भी है, जो इसी दुनिया में इंसान को जला सकती है, यानी बुराइयों की आग।

ऐसे समय में इन गुनाहों की आग से बचने के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के साथ रहो।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुल फितन, हदीस नंबर 7084)

इस युग में इमाम से मुराद हज़रत मसीह मौऊद और महदी मौऊद अलैहिस्सलाम हैं, और उनके बाद उनकी खिलाफ़त है, जिससे हमें मज़बूती से जुड़े रहना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दौर में जब ताऊन (प्लेग) फैली, तो उससे बचने के लिए आपने अपनी तालीम "कश्ती-ए-नूह" दुनिया के सामने पेश की। अल्लाह तआला ने आपको अलग-अलग इल्हामात के ज़रिए इस बीमारी से महफूज़ रहने की बशारत दी और न केवल आपके परिवार बल्कि आप पर ईमान लाने वालों की हिफ़ाज़त की। अल्लाह तआला ने फरमाया:"इन्नी उहाफिज़ु कुल्ला मन फिद्दार" (मैं इस घर के सभी लोगों को ताऊन से महफूज़ रखूंगा।) इसकी व्याख्या में आपने लिखा:

"यह मत समझो कि केवल वही लोग मेरे घर में हैं, जो मेरे इस मिट्टी के घर में रहते हैं। बल्कि जो मेरी पूरी पैरवी करते हैं, वे मेरे रूहानी घर में दाखिल हैं।"

(कश्ती-ए-नूह, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 19, पृष्ठ 10)

सिदक़ से मेरी तरफ आओ इसी में ख़ैर है हैं दरिन्दे हर तरफ मैं आफियत का हूँ हिसार

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह फरमाते हैं:

"आप खुशकिस्मत हैं कि हज़रत इमाम-ए-ज़मां मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हैं और आपको खिलाफ़त से वाबस्तगी की तौफ़ीक़ मिली है, जो अल्लाह के फज़्ल से स्थायी है। जितना आपका खलीफ़ा-ए-वक़्त से व्यक्तिगत रिश्ता मज़बूत होगा, उतना ही आप दीन और दुनिया की भलाइयों में हिस्सा पाएंगे।आपसी रिश्ते बेहतर होंगे। समाज में अमन और सुकून का माहौल पैदा होगा। इसलिए, अमन के इस क़िले से फायदा उठाने के लिए, अपने खिलाफ़त से रिश्ते को मज़बूत से मज़बूत करना होगा। अमन के लिए दुआएं करनी होंगी। अपनी इताअत (आज्ञापालन) के मानदंड ऊंचे करने होंगे। अपने अहलकारों के साथ सहयोग करते हुए खिलाफ़त के हाथ और बाजू बनना होगा।"(संदेश, सालाना इज्तिमा, मज्लिस अंसारुल्लाह, भारत, 8-10 सितंबर 2006)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्ची पैरवी करते हुए रूहानी घर में दाखिल होने के साथ-साथ हज़रत खलीफ़ा-ए-वक़्त के निर्देशानुसार, इस महफ़ूज़ क़िले में दाखिल होने के लिए ज्यादा से ज्यादा दुआ और दुरूद का विर्द करना चाहिए। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन।

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

क्या आज आप ने इन दुआओं का विर्द कर लिया हे

سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّد **(२००बार)**

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْهِ **(१०० बार)**

رَبِّ کُلِّ شَیْءٍ خَادِمُکَ رَبِّ فَاحْفَظْنِیْ وَانْصُرْنِیْ وَارْحَمْنِیْ **(१०० बार)**

कुरआन की सच्चाइयाँ और आधुनिक आविष्कारों से उनकी पुष्टि

(भाषण, डॉक्टर हाफिज़ सालेह मुहम्मद अलाहदीन साहिब, जलसा सालाना क़ादियान.1992)(भाग-२)

सूरह रहमान में तीन प्रणालियों का उल्लेख किया गया है। यह प्रणालियां हैं:

1. पृथ्वी की प्रणाली (ज़मीनी निज़ाम)
2. सौर मंडल (निज़ाम-ए-शम्सी)
3. आकाशीय प्रणाली (निज़ाम-ए-गैलेक्सी)

इनका उल्लेख एक सुंदर अंदाज़ में किया गया है, जिससे पता चलता है कि ये तीनों प्रणालियां एक वैश्विक कानून के अधीन हैं। सैय्यदना हज़रत मसीह मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पुस्तक *सैर-ए-रूहानी* में लिखा: "सार यह है कि ऊपर दी गई आयतों में यह बताया गया है कि पृथ्वी की प्रणाली एक व्यापक प्रणाली का हिस्सा है, जिसे सौर मंडल कहा जाता है। यह पहले की आम धारणा को खारिज करता है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और उसके अधीन है।

दूसरी बात यह बताई गई कि सौर मंडल स्वयं एक और बड़ी और व्यापक प्रणाली के अधीन है। यह वह सत्य है जिसे क़ुरआन ने 1300 साल पहले बताया था। उस समय तक किसी दार्शनिक या धार्मिक व्यक्ति ने इसे नहीं समझा था।"

(सैर-ए-रूहानी, खंड 1, पृष्ठ 101-102)

सूर्य और चंद्रमा का हिसाब से संबंध:

सूरह रहमान की आयत:

"الشمس والقمر بحسبان"

इसकी पुष्टि सूरह युनुस की आयत से भी होती है: "वह वही है जिसने सूरज को प्रकाशमान और चंद्रमा को प्रकाशवान बनाया। उसने इनकी मंज़िलें निश्चित कीं ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब जान सको।" *(सूरह युनुस, आयत 6)*

इस आयत से यह स्पष्ट होता है कि सूर्य और चंद्रमा की गतियों का अध्ययन करने से गणित और खगोल विज्ञान ने अभूतपूर्व प्रगति की।

गणना और खगोल विज्ञान का विकास

चंद्रमा की गतियों का अध्ययन जटिल है क्योंकि चंद्रमा पृथ्वी के नज़दीक है। एक छोटी सी गलती भी तुरंत दिख जाती है।

न्यूटन ने कहा था कि चंद्रमा की गति को समझने से उसके सिर में दर्द हो जाता है। बाद में महान गणितज्ञों ने चंद्रमा की गति को समझने में अपना योगदान दिया।

इस अध्ययन से *celestial mechanics* का जन्म हुआ, जिससे *mathematical physics* विकसित हुई।

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस
सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

बेसल फ़ंक्शन (*Bessel functions*)—जो भौतिकी और इंजीनियरिंग में बेहद उपयोगी हैं—इन्हें एक खगोल वैज्ञानिक ने जटिल गणनाओं को आसान बनाने के लिए विकसित किया था।
आधुनिक कंप्यूटर की मदद से आज हम बहुत सटीक गणनाएं कर सकते हैं और भविष्य में आकाशीय पिंडों की स्थिति जान सकते हैं।
संतुलन (तवाज़ुन) सूरह रहमान में यह भी बताया गया है कि आकाशों में एक संतुलन और मीज़ान (तराज़ू) कायम है।
उदाहरण के लिए, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।
एक तरफ सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति इसे सूर्य की ओर खींचती है।
दूसरी ओर, इसकी अण्डाकार कक्षा (*elliptical orbit*) के कारण उत्पन्न केन्द्रापसारक बल (*centrifugal force*) इसे सूर्य में गिरने से रोकता है।
इसी प्रकार, आकाशगंगाओं में भी ऐसा ही संतुलन पाया जाता है।
आकाशीय पिंडों की गति से उत्पन्न ऊर्जा (*kinetic energy*) और पदार्थ के प्रसार से उत्पन्न ऊर्जा (*potential energy*) में संतुलन होता है।
यह संतुलन आकाशगंगा की संरचना को बनाए रखता है और हमें इसके भीतर मौजूद पदार्थ की मात्रा का अनुमान लगाने में मदद करता है।
(संदर्भ: हफ्ता रोज़ा "बदर", क़ादियान, 24 जून 1993, पृष्ठ 10)

अंतरिक्ष यात्रा और क़ुरआन की भविष्यवाणियां :

संतुलन से बाहर निकलने की चर्चा (सूरह रहमान): सूरह रहमान में बताया गया है कि एक समय ऐसा आएगा जब दो बड़ी शक्तियां, जिन्हें क़ुरआन ने *"सक़लैन"* (जिन और इंसान) कहा, पृथ्वी और आकाशों की सीमाओं से बाहर निकलने की कोशिश करेंगी। आयत-

"يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ"

(सूरह रहमान: 24)

अर्थ-
"हे जिन और इंसान के समूह! यदि तुम आकाशों और पृथ्वी की सीमाओं से बाहर निकल सको, तो निकल कर दिखाओ। लेकिन तुम बिना शक्ति (सुल्तान) के ऐसा नहीं कर सकते।"

क़ुरआन के शब्दों का विश्लेषण:

1. **"अक़्तार"** (قطر): इसका अर्थ है किसी गोले का केंद्र या व्यास, जैसे पृथ्वी का व्यास 8,000 मील और घेरा (परिधि) 25,000 मील है।
2. **"नफ़ूज़"** (نفوذ): इसका मतलब है एक गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र से बाहर निकलकर दूसरे क्षेत्र में प्रवेश करना।
3. **"सुल्तान"** (سلطان): यहाँ यह शब्द अत्यधिक शक्ति, तीव्रता, और वैज्ञानिक ज्ञान का प्रतीक है।

अंतरिक्ष में यात्रा का वैज्ञानिक आधार:

- सर आइज़ैक न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल के नियम से यह पता लगाया कि किसी ग्रह की सीमाओं से बाहर निकलने के लिए कितनी शक्ति की आवश्यकता है।

Escape Velocity (पलायन वेग):

- पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के लिए 11 किमी/सेकंड (करीब 40,000 किमी/घंटा) की गति चाहिए।
- यदि किसी ग्रह पर पलायन वेग प्रकाश की गति से अधिक हो, तो वहाँ से प्रकाश भी बाहर नहीं निकल सकता। ऐसे पिंडों को *ब्लैक होल* कहते हैं।

अंतरिक्ष यात्रा का क़ुरआन में वर्णन: सूरह रहमान में "सुल्तान" के उल्लेख से क़ुरआन ने 1400 साल पहले यह संकेत दिया था कि पृथ्वी से बाहर जाने के लिए अत्यधिक

वैज्ञानिक शक्ति और ज्ञान की आवश्यकता होगी। अरब से चीन तक यात्रा करना बेहद कठिन थी। इसी संदर्भ में हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया था: **"उत्लुबुल इल्म वलो काना बिस्सीन"** अर्थात "ज्ञान प्राप्त करो, चाहे इसके लिए तुम्हें चीन ही क्यों न जाना पड़े।"

ऐसे समय में, अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में विभिन्न ग्रहों से बाहर निकलने का ज़िक्र किया है, जो हमारे लिए ईमान में बढ़ोतरी का कारण बनता है। **अल्हम्दुलिल्लाह।** बीसवीं सदी में अंतरिक्ष यात्रा और इंसान का चांद तक पहुंचना, विज्ञान की उन्नति की महानता को दर्शाने वाली प्रमुख घटनाएं हैं। **सूरह यासीन** में सूरज और चांद के अपने-अपने कक्ष में घूमने का उल्लेख करते हुए अल्लाह तआला फरमाता है कि वह एक नई सवारी तैयार करेगा, जिसे उस समय के लोग नहीं जानते थे। कुरान मजीद में फरमाया गया है:

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ۔

(यासीन: 42-43)

अर्थात, "और उनके लिए यह भी एक निशानी है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्तियों में उठाकर ले जाया और उनके लिए इसी प्रकार की और सवारियां भी बनाई, जिन्हें वे उपयोग में लाएंगे।"

कुरआन मजीद में सूरज और चांद के अपने-अपने कक्ष (ऑर्बिट) में चलने का ज़िक्र करने के बाद, एक नई जहाज जैसी सवारी का उल्लेख करना, जिसमें इंसान भविष्य में आसमानों में घूमेगा, बहुत ही ईमान को मज़बूत करने वाली बात है। मौजूदा समय के हवाई जहाजों और अंतरिक्ष यानों के माध्यम से कुरआन मजीद की इस महान सच्चाई की पुष्टि विज्ञान ने कर दी है।

सूरह अल-इंशिक़ाक़ में भी आसमानी ऊंचाइयों की ओर ले जाने वाली सवारियों का ज़िक्र है। वहां अल्लाह तआला फरमाता है:

"لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ"

(अल-इंशिक़ाक़: 20)

अर्थात, **"तुम सवार होकर विभिन्न स्तरों से गुजरते हुए ऊपर उठोगे।"**

यहां स्पष्ट रूप से अंतरिक्ष यानों का उल्लेख है, क्योंकि कुरआन मजीद में आसमानी ऊंचाइयों को **"سَمٰوٰتٍ طِبَاقاً"** (सूरह नूह: 16) कहा गया है और यहां **"طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ "** के शब्द आए हैं। इस आयत में उन सवारियों का ज़िक्र है, जिनके जरिए इंसान आसमान के स्तरों में एक ऊंचाई से दूसरी ऊंचाई तक उड़ान भरेगा।

चांद, जो ज़मीन से लगभग चार लाख किलोमीटर की दूरी पर है, पर 21 जुलाई 1969 को इंसान ने कदम रखा। यह कुरआन मजीद की इस सच्चाई को और अधिक स्पष्ट करता है।

इसी तरह, सूरह अल-इंशिक़ाक़ की आयत:

" وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ "

(अल-इंशिक़ाक़: 3)

अर्थात, **"एक समय आएगा जब ज़मीन फैला दी जाएगी।"** (84:4)

भी विज्ञान के माध्यम से साबित हो चुकी है। आज ज़मीन के नक्शे और तस्वीरों के जरिए दुनिया को इस तरह फैला दिया गया है कि इसके हर कोने की जानकारी आसानी से ली जा सकती है।

यह सब कुरआन मजीद की महान भविष्यवाणियों की सच्चाई को सिद्ध करता है। **अल्हम्दुलिल्लाह!**

•••••

(भाग ३ जनवरी कि पत्रिका में)